शिव अवतरण

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओमशान्ति मीडिया माउण्ट आबू

धरा पर चल रहा परमात्मा शिव द्वारा महापरिवर्तन का कार्य

नवीन मानवीय सृष्टि की आधारशिला...महाशिवरात्रि

कहते हैं, एक बीज बिना आवाज़ किये उगता है
लेकिन एक पेड़ भारी शोर के साथ गिरता है।
विनाश में शोर है लेकिन सृजन शांत है।

आज किसी भी क्षेत्र में जाइये, तो शोर ही शोर है। दुःख, अशांति, घृणा, नफरत, उदासीनता हर जगह व्यापक है। चारों ओर विनाश के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में शिवरात्रि के महा त्योहार को समझना बहुत ही ज़रूरी हो जाता है। रात्रि माना अंधकार और शिव माना प्रकाश, कल्याणकारी, मंगलकारी। इसको समझें तो ये पता चल रहा है कि सृष्टि के कालचक्र में हम 5000 साल की लम्बी यात्रा करके अब हम इसके अंतिम के भी अंतिम पायदान पर खड़े हैं। किसी को समझ में नहीं आता, मनुष्य की सोच से परे की चीज़ अभी घटित हो रही है, अचानक हो रही है, जिसके कारण दुःख, अशांति अति में है। शास्त्रों में देखें तो कहीं ये वर्णन भी आता कि जब-जब इस दुनिया में पापाचार, अत्याचार सभी सीमायें लांघ चुका होगा तब परमात्मा का दिव्य अवतरण इस धरा दिव्य सृष्टि बनाने के लिए होगा। आप अगर थोड़ा साक्षी भाव से देखें और शांत मन से सोचें तो क्या ऐसा नहीं लग रहा कि वर्तमान समय में नये सृष्टि के सृजन का संधिकाल है! इसी वक्त में परमात्मा शिव शांति से नव विश्व के सृजन का कार्य कर रहे हैं। इस दुनिया के महापरिवर्तन का ये काल चल रहा है। जहाँ विश्व में चारों ओर अज्ञान अंधकार है, हंगामे हैं, त्राहि-त्राहि है, करुण पुकार है, वहीं दूसरी ओर परमात्मा द्वारा अरावली श्रृंखला के सुरम्य वातावरण में शांति के साथ शांति की दुनिया की आधारशिला रखी जा रही है। वैसे कहते भी हैं, चक्र के चार भाग हैं, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। कलियुग के बाद फिर पुनः सतयुग आयेगा। ऐसे में सतयुग में जाने के लिए हमें हमारे मन, बुद्धि, वृत्ति और कृति को श्रेष्ठ बनाने के लिए परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर हमें परमशिक्षक के रूप में सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। और हमें नई दुनिया में जाने के योग्य बना रहे हैं।

जैसे किसी विशेष क्षेत्र में निपुण होने के लिए उसी विषय की पढ़ाई पढ़नी होती है, तभी योग्य बन पाते हैं, उसी तरह सतयुग में जाने के लिए भी वहां की प्रकृति अनुसार हमें लायक बनना होगा। जिसकी ही शिक्षा सतयुग निर्माता, स्वयं परमशिक्षक परमात्मा शिव हमें दे रहे हैं। हमें एक श्रेष्ठ विद्यार्थी बनकर उस शिक्षा को आत्मसात कर सतयुग में जाने के योग्य खुद को बनाना है।

परमात्मा द्वारा सृष्टि के महापरिवर्तन में हम सब आत्माओं की भी विशेष भूमिका है। इस भगीरथ कार्य में हमें भी सहयोग करना है। तभी हमारी मनइच्छित पावन दुनिया इस धरा पर पुनः आयेगी। अब नहीं तो कब नहीं। बस, ये वक्त जा रहा है...

शिवरात्रि आई, अपने साथ ढ़ेरों खुशियां लाई

न जाने हमने खुशियां प्राप्त करने के लिए जीवन में कितने हथकंडे अपनाएं हैं कि कहीं खुशी की झलक हमारे जीवन में मिल जाए। हम तो दर-दर भटकते रहे, तेरे-मेरे में, वस्तु-वैभव, पदार्थों में खुशी ढूंढने की कोशिश की। लेकिन जितना ही ढूंढा उतने ही दूर होते गए। लेकिन आज इस शिव जयन्ती के अवसर पर आपको खुशियों की विधि बताते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि स्वयं खुशियों का दाता, वो प्राणेश्वर, परमेश्वर, परमपिता हमारी खाली झोली को खुशियों से भरने की राह दिखा रहे हैं। अब परमात्मा शिव ने स्वयं आकर ये बताया है कि हे मेरे लाडले बच्चों! खुशियां तो आपके पास ही हैं, लेकिन उसको कैसे अर्जित करना है, ये मैं आपको बताता हूँ। आओ, इस शिवरात्रि के शुभ अवसर पर अज्ञान अंधकार के बादल को हटाएं और अपने आप से भी प्यार करें, अपनी शक्ति यों को पहचानें और मुझ शक्ति यों के सागर के साथ नाता जोड़ खुशियों के झूले में झूलें। यही तो सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाना है।

तो आओ बढ़ायें एक कदम शिव पिता की ओर।
तब दिखेगी जीवन में एक स्वर्णिम सुनहरी भोर।।

शुभकामना संदेश

परमात्म अवतरण का संदेश जन-जन तक पहुंचायें

हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियां हम सबकी नज़रों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। उस परमात्मा शिव के अवतरण का यह संदेश जन-जन तक पहुंच जाये और हर आत्मा सुख, शांति, पवित्रता का वर्सा ले-ले, यही महा शिवजयंती के अवसर पर हमारी शुभ भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटि-कोटि व हार्दिक शुभकामनाएं। **- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़**

शिवरात्रि परमात्म अवतरण की यादगार

परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं, हमारा आत्मबल बढ़ता है क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं। सत्-चित-आनंद स्वरूप हैं लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। परमात्मा शिव जब धरा पर आते हैं, जिसकी यादगार हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये, ब्रह्माकुमारी बहनें इसका आध्यात्मिक रहस्य सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्दी ही इस धरा पर स्वर्णिम युग आयेगा। परमपिता परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं उसके सानिध्य में आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव का ध्यान लगाती हूँ। आप भी इस महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझ अपने जीवन में सुख, शांति लायें, ये मेरी शुभकामना है। **-द्रौपदी मुर्मु,राष्ट्रपति,भारत।**

समय है ज्ञान और योग के इन्नोवेशन का

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान योग और इन्नोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार का अभिनंदन करता हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसे आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। शिवरात्रि के महापर्व पर मैं सभी को कोटि-कोटि बधाई देता हूँ। **नरेन्द्र मोदी,प्रधानमंत्री,भारत।**